जनजातियों के मध्य 1857 का आंदोलन

सन् 1857 में हमारे देश में प्रथम स्वतंत्रता की लड़ाई अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ी गई थी। इस आंदोलन में छोटा नागपुर तथा संथाल परगना की जनजातियों द्वारा महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई गई थी। प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की शुरुआत संथाल परगना के रोहणी नामक स्थान से हुई। इस स्थान पर मेजर मैक्डोनाल्ड के अधीन पांचवीं रेजिमेंट की स्थापना की गई थी। यहां पर आंदोलन को बलपूर्वक दबा दिया गया था, लेकिन रेजिमेंट को यहां से हटाकर भागलपुर ले जाना पड़ा था। इस आंदोलन में बंगाली समुदाय को विशेष क्षति उठानी पड़ी

Scanned with CamScanner

थी। बंगाली समुदाय के लोग अंग्रेजों का साथ दे रहे थे। सही नेतृत्व के अभाव में 1857 का आंदोलन संथाल परगना में सफल नहीं हो सका था।

सन् 1857 के गदर के समय संपूर्ण छोटा नागपुर ब्रिटिश अफसरों के विरोध में आंदोलनरत हो गया था। हालांकि इस आंदोलन के मुख्य निशाना अंग्रेज थे, लेकिन संथाल परगना तथा सिंहभूम में यह आंदोलन जनआंदोलन का रूप ले लिया था। जुलाई 1857 ई. के अंत में कंपनी की फौज में विद्रोह हो गया था। अंग्रेज पदाधिकारियों को जान बचाकर भागना पड़ा था। जमादार माधव सिंह तथा मंगल पाण्डेय विद्रोह करके राँची आ गए थे। राँची के ठाकुर विश्वनाथ शाही, पाण्डेय गणपतराय, रामगढ़ बैटालियन के जमादार माधो सिंह, डोरंडा बटालियन के जयमंगल पाण्डेय, पलामू के नीलांबर-पीतांबर, पोराहाट के राजा अर्जुन सिंह इत्यादि ने इस स्वतंत्रता संग्राम को सुसंगठित ढंग से लड़ने का प्रयास किया था। इन लोगों को बाबू वीर कुंवर सिंह का एजेंट माना जाता था। रामगढ़ राजा के सहयोग से डाल्टन हजारीबाग पहुंचे। हजारी बाग में सिख तथा बंगाली पुलिस बल का उन्हें भरपूर सहयोग मिला। संपूर्ण छोटा नागपुर में मार्शल लॉ लागू कर दिया गया। इस आंदोलन के सभी प्रमुख नेताओं—जय मंगल पाण्डेय, नादिर अली खां, पाण्डेय गणपत राय, ठाकुर विश्वनाथ शाही इत्यादि को पकड़कर फांसी पर लटका दिया गया था।

सिंहभूम के राजा अर्जुन सिंह के नेतृत्व में कोलों ने इस स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया था। राजा अर्जुन सिंह को विद्रोही घोषित किया गया था। उनको पकड़वाने के लिए 1000 रु. का इनाम घोषित किया गया था। उनकी सारी संपत्ति छीन ली गई थी। इस परिस्थिति से निपटने के लिए उन्होंने अपने क्षेत्र के लोहराओं को तीर, धनुष, भाला, बरछी, तलवार, ढाल इत्यादि बनाने का आदेश आग्रह के साथ दिया। 13 अगस्त, 1857 को राजा ने अपने कोल-वीर सपूतों के साथ अंग्रेजों के विरोध में युद्ध घोषित कर दिया। यह युद्ध जनवरी 1859 तक जारी रहा। राजा अर्जुन सिंह के ससुर मयूरभंज राज के राजा थे तथा वे अंग्रेजों के समर्थक एवं सहयोगी थे। राजा अर्जुन सिंह अपने ससुर के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिए थे। लेकिन उन्होंने अपने दामाद पर जरा भी दया नहीं दिखाई तथा उन्हें डाल्टन के समक्ष पेश कर दिया गया। डाल्टन की कृपा से राजा अर्जुन सिंह फरार होकर बनारस में अज्ञातवास करने लगे। लेकिन उनके वीर कोल सैनिकों ने अंग्रेजों के विरोध में अपना संघर्ष 1861 के मध्य तक जारी रखा था।

पलामू में 1857 के आंदोलन को भोक्ता आंदोलन के नाम से जाना जाता है। भोक्ता खरवार जनजाति की एक शाखा है। भोक्ता आंदोलन के नेता निलांबर तथा पितांबर थे। 21 अक्टूबर, 1857 को भोक्ता वीरों ने चैनपुर पुलिस स्टेशन पर कब्जा जमा लिया था। 500 समर्थकों के साथ भोक्ता नेताओं का आगमन लेस्लीगंज में हुआ। उन्हें देखकर लेस्लीगंज थाना में हलचल मच जाना स्वाभाविक था। अंत में उन्हें अपनी जान बचाकर भागना पड़ा था। नवंबर 1857 के मध्य तक संपूर्ण पलामू में विद्रोह की ज्वाला धधक उठी थी। भोक्ता सैनिकों द्वारा मनिका तथा छतरपुर थानाओं को भी लूटा गया था। लेकिन

Scanned with CamScanner

देवराज के राजा तथा अन्य स्थानीय जमींदार अंग्रेजों का साथ दे रहे थे। उनके सहयोग से भोक्ता वीरों को पलामू किला में कैद कर लिया गया था।

Scanned with CamScanner